ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(4): 374-376
www.allresearchjournal.com
Received: 15-02-2020
Accepted: 19-03-2020

डॉ. ज़किया रफत
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, रानी भाग्यवती देवी महिला महाविद्यालय, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. ज़किया रफत
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, रानी भाग्यवती देवी महिला महाविद्यालय, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. ज़किया रफत

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2020.v6.i4e.9880

सारांश
वृद्धावस्था जीवन का अन्तिम तथा महत्वपूर्ण चरण है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से वृद्धावस्था वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति की सामाजिक भूमिका में परिवर्तन आता है। यह वह अवस्था होती है जब उसके पास ज्ञान, अनुभवों और विचारों में सुदृढ़ता और उसकी विकसित सोच से वह सार्थक पहल कर समाज का मार्गदर्शन कर सकता है। प्राचीन काल से हमारे समाज में वृद्धों की सम्मानीय स्थिति रही है परन्तु वर्तमान में औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, व्यक्तिवादिता, नैतिक मूल्यों का पतन आदि कारणों से संयुक्त परिवार टूट रहे है और उनका आकार एकाकी परिवारों ने लिया है। अब पीढ़ियों का अन्तराल बढ़ा है तथ मोबाइल, इंटरनेट तथा सोशल मीडिया के बढ़ते प्रचलन और अत्यधिक व्यस्त जीवन शैली के कारण वृद्ध अपने ही घर में एकाकी, उपेक्षित तथा दोयम दर्जे का जीवन व्यतीत कर रहे है। यही कारण है कि वृद्धाश्रमों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। कहीं परिवार द्वारा कहीं स्वेच्छा से वृद्ध, वृद्धाश्रमों की ओर रूख कर रहे है। वृद्धाश्रम में वे कैसा अनुभव करते हैं? क्या सुविधाएं उपलब्ध है? वे संतुष्ट है या केवल समझौता करने को विवश है। इन्हीं सब प्रश्नों के उत्तरों को खोजने की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन जनपद बिजनौर के वृद्धाश्रम में रह रहे वृद्धों के अध्ययन पर आधारित है।

कूटशब्दः समाजशास्त्रीय अध्ययन, वृद्धाश्रम जीवन, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी, व्यक्ति की सामाजिक भूमिका

प्रस्तावना
वृद्धाश्रम जीवन का अन्तिम तथा महत्वपूर्ण चरण है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, परिवर्ती काल को वृद्धावस्था कहा जाता है।[1]

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार, वृद्धावस्था वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति की सामाजिक भूमिका में परिवर्तन आता है और इस प्रकार यह जैविक से अधिक सामाजिक व्यवस्था द्वारा प्रभावित है।[2] परिवार में माता–पिता के रूप में कार्यों का सम्पादन, आय का घट जाना, सामाजिक कार्यों में कम सक्रियता, खाली समय में वृद्धि इत्यादि वृद्धावस्था को दर्शाता है।[3] वास्तव में व्यक्ति के जीवन में यहीं वह अवस्था है जब उसके पास ज्ञान, अनुभव, विचारों में सुदृढ़ता और उसकी सोच विकसित होकर कुछ सार्थक पहल कर समाज के मार्गदर्शन करने की क्षमता होती है और इसी से वह समाज में विश्वसनीय और सम्मानीय बन जाते हैं।[4] प्राचीन काल से ही भारत में वृद्धों की सम्मानीय स्थिति रही है। परिवार का मुखिया होने के नाते उन्हें परिवार के समस्त निर्णय लेने का अधिकार था।[5] परन्तु अब स्थिति बदल गयी है। समाज में वृद्धों को दोयम दर्जे के व्यवहार का सामना करना पड़ रहा है उनकी समस्याएं विकराल रूप धारण कर रही है।[6] वृद्धों को होने वाली समस्याओं को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 1999 को 'वरिष्ठ नागरिक वर्ष' घोषित कर विश्व का ध्यान आकृष्ट किया फलस्वरूप भारत में भी वर्ष 2000 को ''राष्ट्रीय वृद्ध वर्ष'' के रूप में मनाया गया। हमारे देश में वृद्धों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हुई है। 1901 में भारत में कुल वृद्धों की संख्या 12.1 मिलियन थी जो 2011 में 103.2 मिलियन हो गयी है [7] उनकी संख्या में निरन्तर वृद्धि के साथ उनकी देखभाल को लेकर अनेक प्रश्न उठते रहे हैं क्योंकि प्राचीन सामाजिक मान्यताएं अब बदल रही है।[8] वर्तमान में औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण आदि के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं।[9] एकाकी परिवारों में वृद्धि, महिलाओं का नौकरी करना, संचार तथा यातायात के साधनों का विकास, शिक्षा में वृद्धि, नैतिक मूल्यों का पतन, व्यक्तिवादिता आदि ने वृद्धों की स्थिति को चुनौती दी है।[10] पीढ़ियों का अन्तराल इतना अधिक हो गया है कि वृद्ध जन अपने ही घर में अजनबी हो गये हैं।[11] सोशल मीडिया के बढ़ते प्रचलन से परिवार के सदस्यें को उनसे बात करने की फुर्सत नहीं है फलस्वरूप वे स्वयं को पराधीन, कमज़ोर, असहाय और उपेक्षित अनुभव कर रहे हैं जिससे उन्हें शारीरिक व मानसिक क्षति पहुंचती है।[12] कई बार उनके साथ परिवार में अपराधिक घटनाओं की सूचनाएं भी समाचार पत्रों में प्रकाशित तथा टी0वी0 चैनलों पर प्रसारित होती रहती है। अतः वे परिवार के अन्दर

व बाहर अपने को सुरक्षित अनुभव नहीं कर रहे है। अनेक अध्ययनों ने इस तथ्य को प्रकाशित किया है। सिंह ने वाराणसी शहर के सेवानिवृत्त वृद्धों के अध्ययन में पाया कि 61.44 प्रतिशत वृद्धों के कार्यशील समय की अपेक्षा वर्तमान समय में उनकी स्थिति में गिरावट आयी है।[13]

पचौरी, जे0पी0 एवं अन्य ने उत्तराखण्ड जनपद के पौढ़ी स्थित श्रीनगर शहर के वृद्धजनों के अध्ययन में पाया कि 16 प्रतिशत वृद्ध पारिवारिक समस्याओं से ग्रस्त थे।[14]

मुकेश कुमार ने अपने अध्ययन में पाया कि 39.9 प्रतिशत वृद्ध अपने परिवारों में अपनों के द्वारा उपेक्षित हैं।[15]

शुक्ला एवं गुप्ता ने गाजियाबाद के अध्ययन में पाया कि संयुक्त परिवारों में 58.33 प्रतिशत उत्तरदाता एवं एकाकी परिवारों के 41. 67 प्रतिशत उत्तरदाता वृद्धों के वृद्धाश्रम भेजने के पक्ष में पाये गये।[16]

उपरोक्त कारणों से वृद्धाश्रमों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार देश में इस समय 1150 वृद्धाश्रम हैं जिनमें लगभग 97000 वृद्धों को शरण देने की सुविधा उपलब्ध है। यह वृद्धाश्रम केवल बड़े नगरों में ही नहीं बल्कि छोटे नगरों व कस्बों में भी खुल गये हैं और वृद्ध इनमें शरण ले रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि क्या यह वृद्ध इन वृद्धाश्रमों में प्रसन्न व सुरक्षित है? इन आश्रमों द्वारा उन्हें पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध हैं या नहीं। परिवार से दूर यहाँ आकर वे कैसा अनुभव कर रहे है या परिस्थितियों के साथ समझौता करने पर विवश हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य है–

1. उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन।
2. उत्तरदाताओं के वृद्धाश्रम में रहने के कारणों को ज्ञात करना।
3. उत्तरदाताओं को वृद्ध+आश्रम द्वारा उपलब्ध करायी गयी सुविधाओं का अध्ययन।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन अन्वेषणात्मक तथा वर्णनात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बिजनौर नगर से 10 कि0मी0 दूर स्थित विदुर कुटी वृद्ध सेवाश्रम में रहने वाले वृद्धों पर आधारित है। यह आश्रम सरकारी है और समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित है। यहां पर 150 वृद्धों के रहने की व्यवस्था है परन्तु वर्तमान में 46 वृद्ध (जिनमें 15 महिलाएं व 31 पुरूष) रह रहे हैं। आश्रम में सभी वृद्ध 60+ है। इस आश्रम में रहने, कपड़े, बिस्तर, परामर्श सेवाएं, चिकित्सा, देखभाल, टी0वी0, रेडियो, धार्मिक प्रवचन, विदुर कुटी मंदिर तथा गंगा का भ्रमण, भजन कीर्तन, कूलर, इन्वर्टर आदि अनेक सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती है। एक कमरे में लगभग 25 बिस्तर लगे हैं। महिलाओं के लिए पृथक भवन है। सभी 46 वृद्धों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आयु, जाति, लैंगिक संरचना, वैवाहिक स्थिति, शिक्षा तथा व्यावसायिक स्थिति, आवासीय तथा चिकित्सा सुविधाओं आदि पर आंकड़ें एकत्रित किए गये हैं।

उपलब्धियाँ

अध्ययन की निम्न उपलब्धियाँ रही है।

सामाजिक आर्थिक स्थिति :

आयु संरचना से स्पष्ट है कि 60 प्रतिशत उत्तरदाता 60–70 की आयु समूह है तथा 40 प्रतिशत 70–80 आयु समूह के हैं।

सभी उत्तरदाता हिन्दू धर्म को मानने वाले हैं जिनमें से 30 प्रतिशत सामान्य जति, 62 प्रतिशत पिछड़ी जातियों एवं 8 प्रतिशत अनुसूचित जाति के पाये गये। प्राइमरी स्तर तक शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं की संख्या 48 प्रतिशत, हाईस्कूल स्तर तक 15 प्रतिशत, इण्टर तक 12 प्रतिशत, 25 प्रतिशत अशिक्षित है।

आर्थिक दृष्टि से 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार की आर्थिक स्थिति मध्यम तथा सर्वाधिक 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं की निम्न है।

विवाहित उत्तरदाताओं की संख्या 55 प्रतिशत, अविवाहित 8 प्रतिशत तथा विधवा/विधुर 37 प्रतिशत हैं।

उत्तरदाताओं में से 80 प्रतिशत उत्तरदाता ग्रामीण तथा 20 प्रतिशत नगरीय क्षेत्र से है।

तालिका 1: उत्तरदाताओं की सन्तान सम्बन्धी स्थिति

संतान	संख्या	प्रतिशत
1 बच्चा	8	17.4
2 बच्चे	10	21.7
3 बच्चे	9	19.6
3 से अधिक	8	17.4
निःसंतान	11	23.9
कुल	46	100

तालिका 1 से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं में 17.4 प्रतिशत की पास 1 बच्चा, 21.7 प्रतिशत के दो बच्चे, 19.6 प्रतिशत के 3 बच्चे, 17.4 प्रतिशत के 3 से अधिक बच्चे है। जबकि 23.9 प्रतिशत निःसन्तान है।

तलिका 2: पारिवारिक सदस्यों के साथ सम्बन्ध

सम्बन्ध	संख्या	प्रतिशत
मधुर	8	17.4
खराब	29	63.0
परिवार नहीं है	9	19.6
कुल	46	100

तालिका 2 से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं में से 17.4 प्रतिशत के पारिवारिक सम्बन्ध अच्छे है तथा बड़ी संख्या में 63 प्रतिशत उत्तरदाताओं के सम्बन्ध खराब है। 19.6 प्रतिशत उत्तरदातओं के परिवार नहीं है। वे अविवाहित तथा निराश्रित है।

अध्ययन के दौरान साक्षात्कार के समय 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि परिवार के सदस्य कभी–कभार मिलने आते है।

तालिका 3: वृद्धाश्रम में रहने की अवधि

अवधि	संख्या	प्रतिशत
1 वर्ष	8	17.4
2 वर्ष	14	30.4
3 वर्ष	12	26.1
4 वर्ष	12	26.1
कुल	46	100

तालिका 3 से ज्ञात होता है कि 17.4 प्रतिशत उत्तरदाता 1 वर्ष से, 30.4 प्रतिशत 2 वर्ष से, 26.1 प्रतिशत 3 वर्ष से तथा 26.1 प्रतिशत 4 वर्ष से वृद्धाश्रम में रह रहे हैं।

तलिका 4: वृद्धाश्रम में आने का कारण

कारण	संख्या	प्रतिशत
सन्तान साथ रखना नहीं चाहती थी	20	43.5
स्वयं की देखभाल में असमर्थ थे	6	13.0
परिवार पर बोझ नहीं बनना चाहते थे	8	17.4
निःसंतान	8	17.4
जिलाधिकारी द्वारा भिजवाये गये थे	4	8.7
कुल	46	100

तलिका 4 से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं के वृद्धाश्रम में रहने के कारणों में सर्वाधिक 43.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं की सन्तान उन्हें अपने साथ नहीं रखना चहती थी। 13 प्रतिशत उत्तरदाता शारीरिक रूप से असहाय थे वे स्वयं की देखभाल करने में असमर्थ थे। 17.4 प्रतिशत परिवार पर बोझ नहीं बनना चाहते थे। 17.4 प्रतिशत निसंतान होने के कारण वृद्धाश्रम आये थे तथा 8.7 प्रतिशत उत्तरदाता निराश्रित होने के कारण जिलाधिकारी महोदय द्वारा भिजवाये गये थे।

तलिका 5: आश्रम द्वारा उपलब्ध सुविधाओं से संतुष्टि

सुविधा	संतुष्ट उत्तरदाता सं0 व प्रतिशत	असंतुष्ट उत्तरदाता सं0 व प्रतिशत	कुल उत्तरदाता सं0 व प्रतिशत
आवासीय	42 (91.0:)	04 (8.7:)	46 (100.0:)
भोजन व नाश्ता	40 (86.9:)	06 (13.1:)	46 (100.0:)
बिस्तर तथा वस्त्र	35 (76.0:)	11 (24.0:)	46 (100.0:)
चिकित्सा	42 (91.0:)	04 (8.7:)	46 (100.0:)
मनोरंजन	46 (100.0:)	–	46 (100.0:)
भजन कीर्तन	46 (100.0:)	–	46 (100.0:)
भ्रमण	46 (100.0:)	–	46 (100.0:)

तालिका 5 से ज्ञात होता है कि अधिकतर वृद्ध, वृद्धाश्रम द्वारा उपलब्ध करायी गयी सुविधाओं से संतुष्ट है। केवल 8.7 प्रतिशत आवासीय, 13.1 प्रतिशत भोजन, 24 प्रतिशत बिस्तर तथा वस्त्रों और 8.7 प्रतिशत चिकित्सीय सुविधा से असंतुष्ट थे।

अतः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि वर्तमान में परिवारों में वृद्धों की स्थिति अच्छी नहीं है वे वृद्ध भी जिनके पास 1, 2, 3 या 3 से अधिक संतान हैं वे भी वृद्धाश्रम में रहने को विवश है। न केवल नगरीय बल्कि अधिकतर वृद्ध ग्रामीण पृष्ठभूमि से हैं। अध्ययन यह भी दर्शाते है कि एकाकी परिवार की तुलना में संयुक्त परिवरों के सदस्य वृद्धों को वृद्धाश्रम में भेजने के अधिक पक्ष में हैं। अविवाहित होने, निराश्रित होने, परिवार में संतान के न रखने के कारण तथा शारीरिक विकलांगता के कारण वृद्ध वृद्धाश्रम में आये हैं कुछ स्वेच्छा से भी आये हैं। वृद्धाश्रम में उपलब्ध सुविधाओं से अधिकतर वृद्ध संतुष्ट हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आर्य जगदीश चन्द्र, ''हरिद्वार स्थित वानप्रस्थ आश्रम की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता'' राधा कमल मुकर्जी : चिंतन परम्परा, वर्ष 12, अंक 1, 2010, 67.
2. कुमार, राजीव, ''अवकाश प्राप्ति के बाद पारिवारिक समायोजन' राधा कमल मुकर्जी : चिंतन परम्परा, वर्ष 19, अंक 2, जुलाई–दिसम्बर, 2017, 66.
3. अरिजी, स्क्रोप एंड ट्रेंडस, ''इंट्रोडक्शन टू सोशल जीरेन्टोलॉजी'', इंटरनेशनल सोशल जर्नल, वॉल्यूम 15, (19), 1963, 334.
4. शुक्ला, मीना एवं अनीता गुप्ता, ''वृद्धों की सामजिक स्थिति एवं समस्याएं'' (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण), रवीन्द्र नाथ मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, जनवरी–जून, वर्ष 11, अंक 1, 2009, 52
5. यादव, ललन, ''वृद्धाश्रम में निवास करने वाले वृद्धों का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' राधा कमल मुकर्जी : चिंतन परम्परा, वर्ष 16, अंक 1, जनवरी–जून, 2014, 84.
6. कुमार, राजीव, वही, 67.
7. महापंजीयक और जनगणना आयुक्त, 2011
8. खान, जैड, 1997, ''ऐल्डरली इन मैट्रोपालिसी, नई दिल्ली : इण्टर इंडिया पब्लिकेशंस, 19.
9. गोयल, पूनम, ''रिकिल्स एक्सीडेंट्स'' द हिन्दुस्तान टाइम्स, 18 अक्टूबर, 1998, 3.
10. शुक्ला मीना एवं अनीता गुप्ता, वहीं
11. खान, जैड–वही
12. शुक्ला मीना एवं अनीता गुप्ता, वहीं
13. सिंह, यू0के0, ''पैटर्न ऑफ सोशल एडजस्टमेण्ट एंड इंटरएक्शन इन ओल्ड एज'' (ए सोश्योलॉजिकल स्टडी ऑन द रिटायर्ड एमप्लाइज) पी0एच0डी0 थीसिस ऑफ सोश्योलॉजी डिपार्टमेंट, बी0एच0यू0 वाराणसी, 1999, 246–248.
14. पचौरी, जे0पी0, जे0पी0 भट्ट एवं सुषमा नायाल, ''वृद्धावस्था एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण, राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष 11, अंक 1, जनवरी–जून, 2009, 1–5
15. कुमार, मुकेश, आर0के0 बंसल एंड मनोज बंसल, ''नीड टू सपोर्ट ओल्ड एज होम रेजिडेंट्स'', इंडियन जर्नल ऑफ कम्यूनिटी मेडिसिन, वाल्यूम 33 (2) अप्रैल, 2008, 131.
16. शुक्ला मीना एवं अनीता गुप्ता, वहीं